मुरली, मुरली, मुरली :- अभी बाकी जो भी समय है उसमें मुरली कभी मिस नहीं करना। बाप परमधाम से आता है, सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है और आके महावाक्य उच्चारण करते हैं इसलिए मुरली एक दिन भी मिस नहीं करना। अपना बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक यथाशक्ति बनेंगे। **इसलिए मुरली, मुरली, मुरली।** क्योंकि मुरली में रोज के चार ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं, तो जो भी मिस करता हो, कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली सुनें। कोई न कोई सैलवेशन बनायें।

अव्यक्त बापदादा - 17.2.2011

मुरली, मुरली, मुरली

मुरली में है सचमुच जादु खुदाई
मुरली ने भगवान से कराई सगाई
मुरली कभी मिस न करो मेरे भाई
बुद्धि की खुराक है मुरली की पढ़ाई
मुरली ने ही हमारी तकदीर जगाई
मुरली से आई जीवन में सच्चाई
मुरली से माया भी बहुत घबराई
मुरली ने ही माया पर जीत पहनाई
मुरली से माया ने मुंह की खाई
मुरली पढ़कर अथाह खुशी है पाई
मुरली से जीवन में हरियाली छाई
मुरली बनाती है जीवन को देवताई
मुरली ने विकारों की आग बुझाई
मुरली ने की रावण की ठुकाई
मुरली से पाई ज्ञानरतनों की गहराई
मुरली ने जीवन सुखशान्ति संपन्न बनाई
मुरली ने आत्म ज्योति है जगाई
मुरली ने ही हमारी जान बचाई
मुरली से जीवन में सन्तुष्टता आई
मुरली करती है मन,बुद्धि की सफाई
मुरली बिन सारी व्यवस्था गड़बड़ाई
मुरली से खत्म होती है सारी लड़ाई
मुरली से ही ज्ञान की समझ आई
मुरली करती है सबकी कला चढ़ाई
मुरली कभी मिस न करो मेरे भाई

सच्चा ब्राह्मण

1. ब्रह्ममुहुर्त में उठकर ब्रह्मलोक की सैर करे।
2. ब्रह्मचर्य में रहकर औरों को ब्रह्मचारी बनाए।
3. ब्रह्माण्ड में विचरण करने की मस्ती में रहे।
4. ब्रह्मामुख वंशावली की सदा स्मृति में रहे।
5. ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी के नशे में रहे।
6. ब्रह्मा द्वारा शिव पिता की रोज मुरली सुने।
7. ब्रह्मा बाबा के आचरण को अमल में लाए।
8. ब्रह्मा बाप जैसी बेहद स्थिति में स्थित रहे।
9. ब्राह्मणों का संग करे, औरों को ब्राह्मण बनाए।
10. ब्रह्मा भोजन याद में रह कर करे।
11. ब्राह्मण कुल की लाज रखे, नाम बाला करे
12. ब्रह्मा के हर कर्म को यथार्थ कॉपी करे।
13. ब्राह्मण धर्म में सदा स्थित रहे।
14. ब्राह्मण लाईफ से सन्तुष्टता का अनुभव कराए।
15. ब्रह्मा बाप का साक्षात्कार कराता रहे।
16. ब्रह्ममुहुर्त में बापदादा से वरदान ले।
17. ब्रह्माण्ड में स्थित होकर विश्व को सकाश दे।
18. ब्रह्मलोक में ही खोया-खोया रहे।
19. ब्रह्मा बाप के पदचिन्हों पर चलता रहे।
20. ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं में ही रहे।
21. ब्रह्मा बाप समान बनने का दृढ़ लक्ष्य रखे।